Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-17, Issue-2, September-2023
www.researchguru.net

पुराणों का महत्व

डॉ. सेजल दवे
संस्कृत विभाग

भारतीय वाङ्मय में पुराणों का विशेष स्थान है। वेदों के बाद भारतीय परंपरा के अनुसार पुराणों का ही स्थान आता है। छान्दोग्य उपनिषद् में पुराणों को पंचम वेद कहा गया है।[1]- भागवत पुराण में भी इसे पचम वेद की संज्ञा प्रदान करते हुए ईश्वर के सहस्रमुखों से रचित बताया गया है

"इतिहासपुराणानि पञ्चमं वेदमीश्वरः ।
सर्वेभ्य एव वकक्त्रेभ्यः सयुजे स्वदे्शनः ॥

पुराण भारतीय संस्कृति के भण्डागार हैं। इनमे भारत की सत्य और शाश्वत् आत्मा निहित है। अथर्ववेद में तो पुराणों की उत्पत्ति अन्य वेदों के साथ ही बताई गई है। बृहदारण्यक उपनिषद् के अनुसार, यज्ञ, साम अथर्व और इतिहास–पुराण उस परमतत्व का निःश्वास है।[2]

पुराणों का वैदिक एवं सांस्कृतिक महत्वः

वैदिक काल के अध्ययन के लिए भी पुराणों का महत्व कम नहीं है। पुराणों का मूल भी वेदों में ही है। निःसन्देह वे हमें एक बहुत ही प्राचीन काल तक का ज्ञान प्राप्त कराते हैं।[3] वैदिक अध्ययन के लिए और उन्हें समझने के लिए भारतीय परम्परा पुराणों के अध्ययन को अनिवार्य मानती है।[4] भारतीय संस्कृति की सच्ची झांकी निश्चित रूप से पुराणों के अतिरिक्त अ य कोई ग्रन्थ प्रदर्शित नहीं कर सकता है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के सर्वांगीण अध्ययन के लिए पुराणों का अतुल महत्व है। पुराणों में राजनीति, शासकीय संस्थाए धर्म और दर्शन, विधि और वैधानिक प्रथाएं, ललित कलाए और शिल्प इत्यादि सभी विषयों का समावेश है। पुराणों की रचना किन्हीं विशिष्ट विद्वानों ने नहीं की । महाकाव्य की भांति से पुराणों के निर्माण में भी सूत्रों एवं चारणों का हाथ रहा है ।[5] ये लोग कोई उच्चकोटि के साहित्यकार तो थे नहीं। इनका सम्बन्ध निम्न कोटि के पौरोहित्य से था।[6] ये लोग इन पुराणों का वाचन करते थे। इस प्रकार इन पुराणों के संपादकों को जो कोई भी विषय जहां कहीं से मिला उसको इन्होंने संग्रहीत कर लिया। इस प्रकार यह जन साधारण का साहित्य है,[7] जिसे जन–साधारण के द्वारा जनसाधारण के लिए बनाया गया। इस प्रकार पुराणों का सांस्कृतिक दृष्टि से महत्व और अधिक बढ़ जाता है। पुराणों में तत्कालीन संस्कृति के प्रत्येक पहलू के दर्शन होते हैं। उनमें एक कुशल चित्रकार की भांति तत्कालीन संस्कृति का एक वास्तविक एवं यथार्थ चित्रण किया गया है ।[8] सी० पी० आर० ऐयर के मतानुसार हमें पुराणों में तत्कालीन संस्कृति के वास्तविक स्वरूप का दर्शन होता है। इनमें समस्त भारतीय प्रतिभा और मेवा का निचोड़ है।[9]

पुराणों का ऐतिहासिक महत्वः

ऐतिहासिक दृष्टि से पुराणों का महत्त्व कम नहीं है। पुराण वह अध निधि है। जिनमें प्राग्वैदिक काल से मध्य काल तक के सच्चे और ऐतिहासिक तथ्य छिपे पड़े है।[10] यद्यपि पहले ऐतिहासिक दृष्टि से पुराणों को नितान्त निरुपयोगी और गल्पकथा मात्र समझा जाता था, परन्तु अब इस दृष्टिकोण में परिवर्तन आ गया है। केवल भारतीय विद्वान ही नहीं अपितु पाश्चात्य विद्वान भी पुराणों के ऐतिहासिक महत्त्व से परिचित हो गये हैं। यह बात अवश्य है कि पुराणों में विभिन्न विषयों का समावेश हो जाने के कारण एवं अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णनों के कारण उनमें से ऐतिहासिक तथ्यों को पृथक करने का कार्य थोड़ा कठिन ही है। किन्तु इन कठिनाइयों के होने के उपरान्त भी पुराणों का ऐतिहासिक दृष्टि से अनुशीलन करने काय एफ. ई. पाजिटर को ही जाता है। उन्होंने ही पुराणों के ऐतिहासिक महत्व सर्व प्रथम संसार के सामने प्रस्तुत किया। आधुनिक इतिहास व प्राच्यविद्या विशारद रेप्सन, को स्मिथ, जायसवाल, डी. आर. भण्डारकर, राय चौधरी, प्रधान, रंगाचार्य, अल्टेकर व जयचन्द्र आदि विद्वानों ने ऐतिहासिक अनुजीवन के लिए पौराणिक तथ्यों का प्रचुर उपयोग किया है। इस प्रकार सूक्ष्म अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि हमारी भारतीय इतिहास परा पुराणों में मूर्त रूप में प्राप्त होती है। इन्ही में हमें ऐतिहासिक तथ्यों के पदार्थ

दर्शन होते हैं। सम्प्रति विन्टरनिट[11] आदि विद्वान भी पुराणों के अध्ययन को ऐतिहासिक अनुशीलन के लिए आवश्यक मानते हैं। डॉ० हाजरा के मतानुसार एवं अन्य ग्रन्थों तथा उत्तीर्ण अभिलेखों के साक्ष्य को ध्यान में रखते हुए इस विषय में नहीं कि पुराणों में वास्तविक ऐतिहासिक तथ्यों से पूर्ण सामग्री विद्यमान है।[12]

पुराणों का समाजशास्त्रीय महत्व:

समाजशास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से भी पुराणों का अध्ययन बहुत ही उपयोगी है। प्राचीन भारतीय हिन्दुओं के सामाजिक विकास को देखने के लिए भी पुराणों का महत्व कम नहीं है।" जितने भी धर्म सूत्र आदि धर्म-शास्त्रीय ग्रंथ हैं वे हमारे सामने एक आदर्श समाज का ही चित्र प्रस्तुत करते हैं, लेकिन उनकी सहायता से हम यह नहीं जान सकते है कि किस सीमा तक उन आदशों को व्यवहार में लाया जाता था अथवा लोग उस समय किस प्रकार जीवन-यापन करते थे। यद्यपि पुराण मूलतः धर्मग्रन्थ हूँ किन्तु फिर भी प्रसंगवश उनमें अनेक ऐसे सन्दर्भ प्राप्त होते हैं जिनके आधार पर हम तत्कालीन मनुष्यों के सामाजिक सम्बन्ध की व्यवस्था का परिचय पा सकते हैं।

पुराणों का मनोवैज्ञानिक महत्व:

श्री वाडिया' के अनुसार मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी पुराणों का बहुत महत्व है। पुराणों में अधिकांश ऐसी घटनाएं वर्णित है जिनका हम संकुचित ऐतिहासिक दृष्टि से नहीं कर सकते हैं। उनका बाह्य दृष्टि से उतना महत्व नहीं है जितना कि आन्तरिक से। वे घटनाएं भारतवर्ष में रहने वाली मानव जाति के मानसिक इतिहास की घटनाएं है। मनोवैज्ञानिक इष्टि से उनका बहुत महत्त्व है। जो पुरातन कथाएं वहां प्रस्तुत की गई मनोवैज्ञानिक अंग के अनुसार वे किसी जाति की सामूहिक अचेतन मानसिक प्रक्रियाएं होती हैं। वे समाज के लोगों की उन बातों को भी प्रस्तुत करते हैं जिनके के लोग नैतिक दृष्टि से आती हो गये हैं और जो उन लोगों के रहन-सहन, चिन्तन, अविधि देश भूषा, जगत् विषयक मान्यताएं, ईश्वर व उसका मनुष्य से सम्बन्ध आदि विचार एवं आदर्श जो उनके सामाजिक संगठन में स्थूल रूप से अभिव्यक्त होते हैं तथा कला में स्वयं अभिव्य हो जाते हैं।

पुराणों का धार्मिक महत्व:

धार्मिक दृष्टि से पुराणों का महत्व अकथनीय है। यही कारण है कि उनको मुख्य धार्मिक ग्रन्थ ही समझा जाता है। पुराणों की रचना किन्हीं विशिष्ट विद्वानों द्वारा नहीं की गई अपितु उनकी रचना जन साधारण के द्वारा जन साधारण के लिए की गई। जब वेदों की भाषा जन साधारण की भाषा न रह कर एक दुरूह भाषा बन गई तब उसको जन साधारण को बोधगम्य कराने के लिए पुराणों की रचना की गई। पुराण वेद-विहित धर्म का सरल सुबोध भाषा में वर्णन करते हैं।[13] धार्मिक इतिहास के अनुशीलन की दृष्टि से भी पुराणों का महत्त्व न्यून नहीं।[14] पी० वी० काणे के मतानुसार मध्यकालीन और अर्वाचीन धार्मिक विश्वास एवं व्यवहार पर पुराण ही प्रकाश डालते हैं। इसका कारण यही है कि विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के सिद्धान्तों एवं मान्यताओं को लोक में प्रचलित करने के लिए पुराणों को ही अपना माध्यम बनाया गया।[15] सी० पी० रामास्वामी ऐयर के मतानुसार पुराणों का मुख्य उद्देश्य ही लोगों के मस्तिष्क के सामने भारतीय जीवन चिन्तन और धर्म का मूलभूत सत्य प्रस्तुत करना था।

पुराणों का साहित्यिक एवं दार्शनिक महत्व:

पुराणों का साहित्यिक दृष्टि से मूल्यांकन किया जाये तो हमें निराश ही होना पड़ेगा क्योंकि पुराणों का साहित्य काव्यगत सौष्ठव की दृष्टि से कोई उच्चकोटि का अथवा परिष्कृत साहित्य नहीं है। इसका कारण पहले ही हम बता चुके हैं कि पुराणों की रचना विशिष्ट विद्वानों द्वारा नहीं की गई। हां, अपवाद स्वरूप कुछ अंश अवश्य हमें तत्तत् पुराणों में प्राप्त हो सकते हैं। लेकिन पुराणों में ऐसी कहानियां व पुरातन कथाएं भी हैं जिन्होंने हमारे कवियों को पर्याप्त प्रेरणा प्रदान की है। श्री वाडियार[16] के मतानुसार ये कहानियां व पुरातन कथाएं जहां हमारे कवियों व दार्शनिकों के लिए एक सफल प्रेरणा-स्रोत सिद्ध हुई। वहीं जन साधारण व बालकों के लिए भी वे एक अतुल आनन्द का स्रोत हैं। उन्हें उनके कहानी तत्त्व से भी काफी सन्तोष प्राप्त होता है। पुराणों को ही उस समय एक ऐसा माध्यम समझा गया जिसके द्वारा जन साधारण के सम्मुख गहनतम दार्शनिक सत्य को सरलतम भाषा में रखा जा सके।[17] सर्ग, प्रतिस आदि कुछ ऐसे पुराण विषय हैं जिनमें हमें तत्कालीन सृष्टि विषयक दार्शनिक मान्यताओं का परिचय प्राप्त होता है। पुराणों के द्वारा ही हम वैदिक काल से लेकर मध्य काल तक के दार्शनिक विकास का

परिचय प्राप्त कर सकते है। 'परम्परा पुराण ही हमारे प्राचीन दर्शन चाय द्वारा सनातन एवं शास्वत सत्य को प्रदर्शित करने वाले ग्रंथ समझे गये।

पुराणों का भौगोलिक महत्व:

भौगोलिक अध्ययन की दृष्टि से भी पुराणों का महत्व कम नहीं है। पुराणों में भूगोल एवं बगोल का बहुत विस्तृत विवरण प्राप्त होता है।[18] कंप्टन स्पीक के द्वारा पुराणों के वर्णन को ही आधार मानकर मिश्र देश में बहने वाली नील नदी के उद्गम स्थल का पता लगाया गया। इसी घटना से पुराणों के भौगोलिक वर्णन की यथार्थता सिद्ध हो जाती है । पुराणों में समस्त भूगोल भुवनकोण के अन्तर्गत प्राप्त होता है। इस प्रकार यह भौगोलिक विवरण हमें दो रूपों में प्राप्त होता है- (1) समस्त विश्व का भूगोल और (2) भारत का भूगोल । पुराणों में समस्त संसार को सात द्वीपों में विभाजित किया गया है। ये सात द्वीप जम्बू, प्लक्ष, शाल्मली, कुश, क्रौंच, शक व पुष्कर है। फिर इनका वर्णों के अंतर्गत विभाजन किया गया है। इन द्वीपों के वर्णन के अन्तर्गत उनका परिमाण, वहां के निवासी, उनके उपास्य देव, वहां के पर्वत, वन, नदी आदि का वर्णन प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार पुराणों में अनेक परिवर्तन होने के बाद भी प्राचीन काल के भूगोल के विषय में बहुमूल्य सामग्री भरी पड़ी है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पुराणों में तत्तत् विषयों से सम्बन्धित अनेक प्रकार की सामग्री संगृहीत है । इस प्रकार से पुराण एक प्रकार का विश्वकोष बन गये हैं। यद्यपि सभी पुराणों को हम इस श्रेणी में नहीं ला सकते हैं फिर भी प्रत्येक पुराण में प्रसंगतः अनेकविध सामग्री उपलब्ध होती है। स्क. पु. में कहा गया है कि जो न वेदों में दृष्ट है और न स्मृतियों में वह सब पुराणों में कथित है। पार्जिटर के अनुसार पुराणों में सृष्टि शास्त्र, देववंश-परम्परा, शासकों और ऋषियों की वंश परम्परा, धार्मिक विश्वास आदि सभी प्रकार के विषयों का समावेश हुआ है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति में पुराणों का विशिष्ट महत्त्व है और इनमें समसामयिक काम की संस्कृति से सम्बद्ध प्रभूत ऐतिहासिक सामग्री प्राप्य है।

सन्दर्भ:

1. ऋग्वेदं भगवो (ध्येमि यजुर्वेद सामवेदमयवंणं चतुर्थमितिहासपुराणं पंचम वेदानां वेदम्) । छा.उ. ७.१.२
2. अस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद् पद्श्वेद सामवेदो अथवागिरसः इतिहासः पुराणम् । बृ. उ. 2-4-10
3. विन्टरनिट्स हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर, जि. 1, पृ. 518
4. इतिहासाच्या वेदं समुचयेत्। म. भा. (फिटिक्न एडि.) 1-1-204 वेदादिधिकं मन्ये पुराणार्थं वरानने । वेदां प्रतिष्ठिताः सबै पुराणे नाव संशयः 11 ना. पु. 2-24-17
5. हिस्ट्री ए रुचर ऑफ इण्डियन पोपुल (क्लासिकल एज), पृ. 296
6. विन्टरनिज, पूर्व. , पृ. 530
7. बही
8. एस. जी. कन्तबाल, कल्चरल हिस्ट्री फ्राम मत्स्य पुराण, पृ. VII
9. सी. पी. बार. ऐयर का 'सम पाट्स ऑन द पुराणज' शीर्षक लेख, पृ. 699
10. आचार्य चतुरसेन, पूर्व पृ. 11
11. विन्सेन्ट ए. स्मिथ, दि जन हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, पृ. 11
12. आर. सी. हाजरा, 'द पुराणाज', द कल्चरल हेरिटेज ऑफ इडिया, जि. 2, पृ. 265
13. बलदेव उपाध्याय आर्य संस्कृति के आधार ग्रन्थ पृ. 152
14. पी. बी. काणे, हिस्ट्री जॉफ धर्मशास्त्र, जि. 1, पृ. 162 5. टी. जे. हॉपकिन्स, कृष्ण मिस, राइट्स एण्ड एटीट्यूड्स, पृ. 3 ।
15. इ. रिव्यू ऑफ इण्डोलाजिकल रिसर्च इन लास्ट 75 इयर्स
16. पुराण बुलेटिन, जि. 5, भाग 1, पृ. 7 ।
17. वही, पृ.8
18. अ.पु. 119 108, दे. भा. 12.10, प. पु. 1.9-26-40, भा.पु. 5:16-40 इत्यादि।